17 जून 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः

6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 6 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देश की राजधानी दिल्ली में भी अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ मनाई गई -

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्म जयन्ती

दिल्ली : 48वें प्रशिक्षण शिविर के दौरान रविवार 25 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती अभूतपूर्व उल्लास और आनंद के साथ मनाई गई। गुरुदेव के मांगलिक एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विशेष उद्बोधन के उपरान्त वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार को आगे बढाने में जिनका महत्वपूर्ण योगदान है, ऐसे 125 विभूतियों/संस्थाओं को अत्यन्त आग्रहपूर्वक आमंत्रित किया गया और उपस्थित अतिथियों को मेमेन्टो, प्रशस्ति-पत्र भेंटकर भावभीना अभिनन्दन किया गया।

प्रात:काल नित्यनियम पूजन के उपरांत जैसे ही लोग पांडाल में प्रवेश हेतु आने लगे शिविर कमेटी के लोगों ने गुरुदेव का पेंडल लगी हुई मोतियों की माला बहुमान पूर्वक प्रत्येक आगंतुक को पहनाई, जिससे पूरा पाण्डाल गुरुदेवमय हो गया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित अभयकुमारजी के साथ सम्मानित विशिष्ट महानुभाव एवं शिविर कमेटी के पदाधिकारीगण

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के मांगलिक एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के गुरुदेवश्री के जीवन-चरित्र पर मार्मिक प्रवचन के पश्चात् गुरुदेवश्री की 125वीं जन्म जयन्ती के प्रारम्भ में 125 बालकों एवं 125 बालिकाओं को ब्र. सुमतप्रकाशजी ने आजीवन समय और शक्ति के अनुसार स्वाध्याय और सदाचारमय जीवन जीने का संकल्प दिलाया, वह संकल्प इसप्रकार है -

'मैं आज देव-शास्त्र-गुरु की साक्षी में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के 125वें जन्म-जयन्ती समारोह के पावन अवसर पर आजीवन यथाशक्ति समयानुसार स्वाध्याय करते हुये जिनशासन की प्रभावना हेतु शिविर आदि की कृत-कारित-अनुमोदना करूँगा एवं जैन संस्कृति को समझकर उसके गौरव की रक्षा करने हेतु साधर्मी विवाह करूँगा/करूँगी।'

इन सभी को विशेष रूप से तैयार कराये गये धातु के धर्मध्वज एवं संकल्प-पत्र प्रदान किये गये। इस दृश्य को देखकर सभा में उपस्थित हजारों साधर्मीजनों ने भी इसी प्रकार स्वाध्याय करने का संकल्प व्यक्त किया। इस पूरे कार्यक्रम को विशेष रूप से यू-स्ट्रीम पर लाईव देखा एवं फेसबुक व यू-ट्यूब पर भी विश्वभर के सैंकड़ों मुमुक्षुओं ने देखा।

इस कार्यक्रम में दिल्ली व आसपास के 3500-4000 साधर्मीजन उपस्थित थे।

इस अवसर पर जिन 125 महानुभावों का सम्मान किया गया, उनके नाम इसप्रकार हैं - बेनश्री चम्पाबेन सोनगढ के लिये ब्र. भद्राबेन एवं मैना बेन सोनगढ, ब्र. शांताबेन सोनगढ के लिये उनकी भांजी ब्र. रमाबेन देवलाली, इसके अलावा पण्डित रामजीभाई दोशी एवं पण्डित खीमजीभाई सेठ राजकोट

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

संकल्प ग्रहण करने वाले 125 बालक व 125 बालिकाएं

भव्य और विशाल पाण्डाल में उपस्थित जनसमुदाय

सम्पादकीय –

आयोजन का प्रयोजन पहचानें

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

तिरिया चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यं।
देवो न जानाति, कुतो मनुष्य।।

हो सकता है कि सामान्य नारियों के मायाचारी कुटिल स्वभाव को देखकर और पुरुषों के अनायास होते उत्थान-पतन को देखकर कवि ने अफसोस व्यक्त करते हुए उक्त पंक्तियाँ लिखी हों –

ये पंक्तियाँ लिखते समय कवि का क्या अभिप्राय रहा होगा? उनके दृष्टिपथ में कैसी स्त्रियाँ और कैसे पुरुष रहे होंगे – यह तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि स्त्री जाति कुटिलता के लिए बदनाम भी रही हैं; सामान्यतः अधिकांश नारी जाति पेट में पाप रखती हैं, छल करती हैं, वे कब क्या कर बैठें – इस बात को देवता भी नहीं जान सकते। मनुष्य तो कैसे जान सकेंगे; परन्तु समता श्री और जीवराज उन साधारण मनुष्यों में नहीं है। उन्होंने तो स्व-पर के हित में अपने जीवन को अनेक मोड़ दिए और अंत में अपने मानव जीवन को धन्य कर लिया।

''जब उक्त पंक्तियों के आलोक में मैं समताश्री के चरित्र और जीवराज के भाग्य को देखता हूँ तो मुझे लगता है निश्चय ही ये पंक्तियाँ इन्हीं जैसे किन्ही महान चरित्र नायक-नायिकाओं एवं सौभाग्यशाली जीवों के संदर्भ में कहीं गईं होंगी।

समता श्री के बचपन से विवाह तक की जीवन यात्रा को देखकर यह कौन कल्पना कर सकता था कि ब्याह के बाद समताश्री को कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा और वे किन-किन परिस्थितियों से गुजरेंगी ? तथा वे स्वयं के व्यक्तित्व का विकास किस ढंग से कैसे करेंगी ? यह सब उनके भविष्य के गर्भ में था।

अभी तक 'भरतजी घर में ही वैरागी' की कहानी सुना करते थे परन्तु भरतजी के सामने ऐसी कोई चुनौतियाँ नहीं थीं; जैसी समताश्री के समक्ष उपस्थित हुई; परन्तु वे वस्तु स्वातंत्र्य की श्रद्धा के बल पर विषम से विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए स्वयं को संभाले रही।' यह सुखद आश्चर्यजनक बात है।

यदि तत्त्वज्ञान का बल न होता, क्रमबद्ध पर्याय की श्रद्धा न होती, चार अभाव और षट्कारकों का ज्ञान न होता तो उसके जीवन के किसी भी मोड़ पर, कोई भी असंभावित दुर्घटना घट सकती थी। जीवन के किसी भी उतार-चढ़ाव में वह विचलित हो सकतीं थी; नारी के चरित्र को सर्वज्ञ के सिवाय और कौन जान सकता था, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ; क्योंकि उसे तत्वज्ञान का सम्बल था।

आज हम समताश्री की तुलना पौराणिक और ऐतिहासिक नारियों से करने के लिए पीछे मुड़कर देखते हैं तो राजुल, सीता, द्रौपदी और अंजना से भी वह दो कदम आगे दिखाई देती है। यह सब उसके जीवन पर पड़े अध्यात्म का ही प्रभाव है।

यदि अन्य नारियों को अपने जीवन को सार्थक करना हो तो उन्हें समताश्री के आदर्शों पर चलना ही होगा।''

इसीप्रकार जब हम जीवराज के भाग्य का अवलोकन करते हैं तो उनके भाग्य ने भी अनेकों करवटें बदलीं। उनके जीवन ने यह सूक्ति सार्थक कर दी कि **'सबै दिन जात न एक समान'** जीवराज यौवन के आरंभ में चारुदत्त की भाँति भटक गये थे। किसी तरह सन्मार्ग पर आये तो कुछ दिन बाद ही जब उन्हें पूरे दायें अंग में लकवा और हाथ-पैरों में कम्प रोग का भयंकर आक्रमण हुआ तो सभी ने उनके जीवन की आशा ही छोड़ दी थी; परन्तु उनके भाग्य ने पुनः करवट बदली और उनकी सती सावत्री जैसी धर्मपत्नी समताश्री अपनी अथक सेवा से अन्ततः उन्हें मौत के मुँह से छुड़ाकर वापिस लाने में सफल हो ही गईं।

जीवराज का कम्परोग तो ठीक हुआ ही, आवाज भी लौट आई।

महावीर जयन्ती के मंगल महोत्सव के दिन उनके मुँह से वर्षों बाद महावीर वन्दना के निम्नांकित छन्द निकले तो सभी श्रोताओं के मन मयूर नाच उठे। समताश्री के तो हर्ष का ठिकाना ही न रहा। वे बोल रहे थे –

''जिसने बताया जगत को प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्ता न धर्ता कोई है, अणु-अणु स्वयं में लीन है।।
आतम बने परमात्मा, हो शान्ति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के संदेश में।। [१]
जो निज दर्शन ज्ञान चरित अरु, वीर्य गुणों से हैं महावीर।
अपनी अनन्त शक्तियों द्वारा, जो कहलाते हैं अतिवीर।।
जिसके दिव्य ज्ञान दर्पण में, नित्य झलकते लोकालोक।
दिव्यध्वनि की दिव्यज्योति से, शिवपथ पर करते आलोक।।'' [२]

जीवराज को अपने जवानी के जोश में खोए होश की सजा मानो इसी जन्म में मिल चुकी थी। उनके भाग्य के इस उतार-

१. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : महावीर वंदना
२. पं. रतनचन्द भारिल्ल महावीर स्तवन

चढ़ाव को देखकर सैकड़ों लोगों ने सबक सीखा और अपने इस दुर्लभ मनुष्यभव को सफल करने के लिए नियमित स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञायें कर लीं; क्योंकि उन्होंने पढ़ा था, सुना था कि –

''ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।
यह परमामृत जन्म-जरा मृतु रोग निवारण।।

तथा –

कोटि जन्म तपतपें ज्ञान बिन कर्म झरैं जो।
ज्ञानी के छिन माँहि त्रिगुप्ति से सहज टरैं ते।[१]

महावीर जयन्ती के दिन ही जीवराज को मानो नया जन्म मिला है, अतः उन्हें शाम की संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित करके उनका स्वागत किया गया। उन्होंने गद्-गद् भाव से अपनी हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए आज के विषय से संबंधित कुछ वे बातें भी कहीं, जो उन्होंने बीमारी की अशक्त अवस्था में टेप प्रवचनों द्वारा सुनी थीं।

उन्होंने आज के निर्धारित विषय पर अपना चिन्तन प्रस्तुत किया –

''षट्कारक कारण-कार्य प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। मोक्षमार्ग की उपलब्धि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वस्तुस्वातंत्र्य जैसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त को समझने के लिए षट्कारकों का समझना अति आवश्यक है।

यह विषय वस्तुस्वातंत्र्य, कारण कार्य स्वरूप, कर्ता-कर्म और अनेकांत जैसे प्राणभूत सिद्धान्तों जैसा ही महत्वपूर्ण प्रकरण है।

वस्तु की स्वतंत्रता का उद्घोषक और वीतरागता का हेतुभूत यह षट्कारक प्रकरण मोक्षमार्ग में ऐसा उपयोगी विषय है, जिसके जाने बिना वस्तु की कारण-कार्य व्यवस्था का ज्ञान अधूरा है; इससे आत्मोपलब्धि में हेतुभूत स्वावलम्बन का मार्ग सुलभ होता है।

षट्कारकों का विशद विवेचन प्रवचनसार गाथा १६, पंचास्तिकाय गाथा ६२ तथा ६४ एवं ४७ शक्तियों में आई षट्कारक शक्तियों में विशेष किया है।''

इसप्रकार जीवराज के उद्बोधन को सुनकर सभी को भारी संतोष हुआ। इसी विषय पर अध्यापक श्री जिनसेनजी ने मंगलाचरण करते हुए संगोष्ठी के रूप में प्रश्नोत्तर शैली में यही षट्कारक का विषय प्रस्तुत किया।

''स्वात्मोपलब्धि प्राप्त स्वाश्रित, स्वयं से सर्वज्ञता।
स्वयंभू बन जाता स्वतः अरु स्वयं से समदर्शिता।।

१. कवि दौलतराम : छहढाला

स्वतः होय भवितव्य, षट्कारक निज शक्ति से।
उलट रहा मन्तव्य, मिथ्यामति के योग से।।

इस मंगलाचरण में कहा गया है कि स्वानुभूति, सर्वज्ञता, वीतरागता आदि निज कार्य के षट्कारक निज शक्ति से निज में ही विद्यमान हैं; किन्तु मिथ्या मान्यता के कारण अज्ञानी अपने कार्य के षट्कारक पर में खोजता है। यही मिथ्या मान्यता राग-द्वेष की जनक है। अतः कारकों का परमार्थ स्वरूप एवं उनका कार्य-कारण सम्बन्ध समझना अति आवश्यक है। **अविनाभाव**[१] वश जो बाह्य वस्तुओं में कारकपने का व्यवहार होता है, वे व्यवहार कारक हैं।

जिनसेन का संकेत पाकर एक शिष्य ने प्रश्न किया – ''गुरुदेव! कारक कहते किसे हैं?''

जिनसेन ने उत्तर दिया – ''जिसका क्रिया से सीधा सम्बन्ध हो, जो क्रिया के प्रति किसी न किसी रूप में प्रयोजक हो, जो क्रिया निष्पत्ति में कार्यकारी हो, क्रिया का जनक हो; उसे कारक कहते हैं।''

तात्पर्य यह है कि जो किसी न किसी रूप में क्रिया व्यापार के प्रति प्रयोजक हो, कार्यकारी हो, वही कारक हो सकता है अन्य नहीं; कारक छह होते हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

एक श्रोता ने पूछा –गुरुदेव ! इन छहों सामान्य कारकों का स्वरूप क्या है और ये कार्य के निष्पन्न होने में किसप्रकार कार्यकारी हैं ?

जिनसेन ने कहा – ''सर्वप्रथम षट्कारकों का सामान्य स्वरूप बताते हैं :–

१. कर्त्ताकारक : जो स्वतंत्रता से स्वयं कार्यरूप परिणमित होता है तथा जो क्रिया व्यापार में स्वतंत्ररूप से कार्य का प्रयोजक हो, वह कर्त्ता कारक है। प्रत्येक द्रव्य अपने में स्वतंत्र व्यापक होने से अपने ही परिणाम का निश्चय से कर्त्ता है।

2. कर्म कारक : कर्त्ता जिस परिणाम (पर्याय) को प्राप्त करता है, वह परिणाम उसका कर्म है।

3. करण कारक : क्रिया की सिद्धि में जो साधकतम होता है, वह करण कारक है।

4. सम्प्रदान : कर्म परिणाम जिसे दिया जाय वह सम्प्रदान है।

5. अपादान : जिसमें से कर्म हो, वह ध्रुव वस्तु अपादान है।

6. अधिकरण : क्रिया की आधारभूत वस्तु अधिकरण कारक है। अथवा जिसके आधार से कार्य हो , वह अधिकरण है।

१. जिस परद्रव्य की उपस्थिति के बिना कार्य न हो। जैसे – घट कार्य में कुंभकार, चक्र, चीवर आदि।

पंचास्तिकाय गाथा ६२ में कहा है कि 'सर्व द्रव्यों की प्रत्येक पर्याय में ये छहों कारक एकसाथ वर्तते हैं, इसलिए आत्मा और पुद्‌गल शुद्धदशा में या अशुद्ध दशा में स्वयं छहों कारकरूप निर्पेक्ष परिणमन करते हैं, दूसरे कारकों की अर्थात् निमित्त कारणों की अपेक्षा नहीं रखते।'

प्रवचनसार गाथा १६ में भी कहा है – 'निश्चय से पर के साथ आत्मा का कारकता का सम्बन्ध नहीं है, जिससे शुद्धात्मस्वभाव की प्राप्ति के लिए पर सामग्री को खोजने की आकुलता से परतंत्र हुआ जाय। अपने कार्य के लिए पर की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं है। अतः पराधीनता से बस हो।' **(क्रमशः)**

शोक समाचार

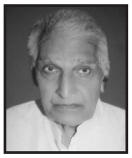

(1) टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्रथम बैच के विद्यार्थी प्रो. (डॉ.) श्रीयांसकुमारजी सिंघई के पिताजी खुरई-सागर (म.प्र.) निवासी **सिंघई जिनेश्वरदासजी जैन** का दिनांक 26 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) सिवनी (म.प्र.) निवासी श्री गेंदालालजी सिंघई का दिनांक 23 मई को 93 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने दिगम्बर जैन तीर्थ थूवोनजी, बूढी चन्देरी, चंदेरी, खंदारजी आदि क्षेत्रों के लिये बहुत समर्पित भाव से कार्य किया है। ज्ञातव्य है कि आप श्री सुबोधजी सिंघई के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

बाल शिक्षण शिविर संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 2 से 8 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मनोजजी बंगेला सागर ने की। शिविर का उद्‌घाटन श्री आदर्श कुमार जैन (जिला एवं सत्र न्यायाधीश) ने एवं ध्वजारोहण डॉ. बबीता राठौर (तहसीलदार-बड़ामलहरा) ने किया। मंगलाचरण शशांक सिंघई ने एवं स्वागत भाषण ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विनोदजी डेवडिया ने दिया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री, डॉ. ममता जैन उदयपुर आदि के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के संयोजक स्वतंत्रजी शास्त्री सहसंयोजक कमलेशजी शास्त्री टीकमगढ थे।

शिविर में 200 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया। इस अवसर पर यहाँ संचालित समंतभद्र शिक्षण संस्थान के लिए भी विद्यार्थियों का चयन किया गया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

का अभिनन्दन भी ब्र. रमा बेन देवलाली को दिया गया। ब्र. चन्दुभाई जोबालिया सोनगढ के लिये श्री हर्षदभाई कोलकाता, श्री नटवरभाई शाह बड़ोदरा, श्री मनुभाई कामदार के लिये श्री कौशल लखाणी, श्री निहालभाई सोगानी अजमेर के लिये उनके सुपुत्र श्री रमेशभाई सोगानी कोलकाता, श्री मल्लिनाथ बाबा गोड पाटिल के लिये उनकी सुपुत्री धवलश्री बेलगाव, स्व.दीपचंद सेठिया सरदारशहर के लिये श्री अभयकरण सेठिया, श्री सुमित सेठिया हीरेन्द्र सेठिया परिवार दिल्ली, पण्डित लालचंद्र भाई मोदी के लिये श्री हर्षदभाई कोलकाता, श्री नवनीतभाई जवेरी के लिये उनकी सुपुत्री पद्मश्री दर्शना जवेरी मुम्बई, श्री जम्मूभाई रवाणी अहमदाबाद, श्री गांगजी भाई मोता के लिये श्री रसिकभाई-नवीनभाई शाह-भोजराजभाई शाह, श्री नागरदास बेचरदास मोदी के लिये श्री जीतुभाई सोनगढ, पण्डित पद्माकर दोडल हिंगोली के लिये श्री पंकजभाई मुम्बई, श्री हरिभाई भायाणी के लिये श्री हेमंतभाई भायाणी, बाबू जुगलकिशोर कोटा के लिये श्री चिन्मय जैन कोटा, श्री हिम्मतभाई हरगोविन्दभाई के लिये ब्र. मालतीबेन सोनगढ, पण्डित विमल दादा झांझरी उज्जैन के लिये ब्र.समता झांझरी उज्जैन, श्री इन्द्रसेन सेठी दिल्ली के लिये श्री विवेक व अभिषेक सेठी परिवार दिल्ली, पण्डित राजेन्द्र कुमार जैन जबलपुर के लिये पण्डित नरेन्द्र जैन जबलपुर, स्व. श्री बालचन्द पाटनी कोलकाता के लिये उनके सुपुत्र श्री सुरेश पाटनी कोलकाता, स्व. प्रकाशचंदजी 'हितैषी' (भारिल्ल) दिल्ली के लिये श्री श्रेणिक जैन दिल्ली, ब्र. कैलाशचंद 'अचल' ललितपुर, पण्डित शिखरचंद जैन विदिशा, पण्डित चैनसुखदास जयपुर के लिये श्री आनंद-प्रदीप जैन जयपुर, डॉ. हुकमचंद भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचंद भारिल्ल जयपुर, श्री आदिनाथ नखाते नागपुर के लिये श्री अजित कुमार जैन बड़ौदा, ब्र. यशपाल जैन जयपुर, श्री पृथ्वीचंद दिल्ली, पण्डित राजकिशोर बड़ौत के लिये श्रीमती मंजुला जैन एवं पुत्री मोनिका जैन, ब्र.हरिभाई सोनगढ के लिये उनके भतीजे श्री महेशभाई मेहता मुम्बई, पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली, स्व. कैलाशचंद जैन अलीगढ के लिये श्री पवन जैन मंगलायतन, पण्डित परमेष्ठीदास ललितपुर के लिये श्री अशोक जैन प्रदीप जैन ललितपुर, श्री महीपाल ज्ञायक बांसवाड़ा, डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई, कविवर राजमल पवैया भोपाल के लिये श्री भरत पवैया भोपाल, श्री पवन जैन मंगलायतन, श्री प्रेमचंद बजाज कोटा के लिये श्री धमेन्द्र जैन कोटा, श्री रहतुमल जैन दिल्ली के लिये श्री नरेन्द्र कुमार जैन बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली, पण्डित ज्ञानचंद विदिशा के लिये श्री केशरीचंद पाटनी सोनागिरी, ब्र.जतीशचंद शास्त्री सनावद के लिये पण्डित संदीप शास्त्री, स्व.पूरनचंद गोदिका जयपुर, श्री पदमचंदजी आगरा, पण्डित नेमीचन्द पाटनी आगरा के लिये श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल मुम्बई, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के लिये ब्र. भद्रा बेन सोनगढ, संतलाल कवि नकुड़ एवं लाला जम्बूप्रसाद सहारनपुर के लिये श्री राजकुमार जैन सहारनपुर, श्री अनंतभाई सेठ, निमेश भाई शाह एवं श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई के लिये पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली को सम्मान प्रदान किया गया।

उक्त संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की कल्पना और श्रमपूर्ण संयोजन से ही अत्यंत सुन्दर ढंग से पूर्ण हो सके। कार्यक्रम का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का –

37वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

दिल्ली : दिनांक 24 मई 2014 को दिलशाद गार्डन दिल्ली में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 37वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वें जन्म जयन्ती वर्ष के दौरान देशभर में अन्यान्य कार्यक्रमों के आयोजन के संकल्प के साथ संपन्न हुआ।

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन के आगामी कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए आह्वान किया कि ''आवो मारी साथे (मेरे साथ चलिये)'' योजना के माध्यम से देशभर में अधिक से अधिक लोगों को आत्मकल्याण हेतु स्वाध्याय आदि गतिविधियों में जुड़ने के लिये प्रेरित किया जाये।

''आवो मारी साथे (मेरे साथ चलिये)'' योजना पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आज यदि हम इस मार्ग पर हैं तो यह निश्चित है कि एक न एक दिन कोई हमें अंगुली पकड़कर इस मार्ग पर लाया होगा, यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो क्या होता ? क्या हमें यह मार्ग मिल पाता ? तब क्यों नहीं अब हम भी अन्य लोगों को इस सन्मार्ग पर लाने में निमित्त बनें।

इस अवसर पर राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा एवं गणतंत्र शास्त्री आगरा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का प्रारम्भ विवेक शास्त्री दिल्ली के मंगलाचरण से हुआ और अधिवेशन के आयोजक अ.भा. जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन दिल्ली शाखा के अध्यक्ष श्री दीपकजी जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं आभार प्रदर्शन फैडरेशन के संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री ने किया।

इस अधिवेशन के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन सूरजमल विहार दिल्ली एवं मुख्य अतिथि श्री पी.के. जैन रूड़की थे।

इस अवसर पर सभी विद्वत्गणों के साथ-साथ राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के अलावा पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर (प्रदेशाध्यक्ष–राजस्थान), पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा (प्रदेश महामंत्री–राजस्थान), डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर (प्रदेश उपाध्यक्ष–राजसथान), श्री आदीशजी जैन दिल्ली (प्रदेशाध्यक्ष–दिल्ली), श्री दीपक जैन दिल्ली (अध्यक्ष–विश्वासनगर शाखा), शिविर आयोजन समिति के श्री मंगलसेनजी जैन (अध्यक्ष), श्री वज्रसेनजी जैन (महामंत्री), श्री प्रमोदजी जैन (मुख्य संयोजक) एवं श्री के.के. जैन (कार्याध्यक्ष) आदि पदाधिकारी उपस्थित थे। साथ ही श्री नीरजजी जैन शाखा दिलशाद गार्डन दिल्ली, श्री ऋषभजी जैन शाखा उस्मानपुर दिल्ली एवं श्री संजयजी जैन शाखा बहादुरगढ भी उपस्थित थे।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

दिल्ली : यहाँ दिलशाद गार्डन में प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 3 जून को सायंकाल प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मधुर जैन जयपुर, शैलेन्द्र यादव मंगलायतन, ज्योति प्रदीप महाजन सेनगांव, नेहा जैन खडगपुर, रजनी जैन आगरा, चिन्मय नंदकिशोर काटोल, प्रांजल सुनील जैन प्रतापगढ, गुंजन जैन अरथुना, आत्मार्थी सलोनी जैन बहादुरगढ, अनुभव जैन चैतन्यधाम, पारस जैन बहादुरगढ आदि ने शिविर से संबंधित अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही सभी प्रशिक्षणार्थियों ने अपने-अपने गांव जाकर पाठशाला प्रारम्भ करने का संकल्प व्यक्त किया।

दीक्षान्त समारोह – दिनांक 4 अक्टूबर को प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरांत दीक्षान्त समारोह जैनबहादुर जैन कानपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें शिविर की रिपोर्ट बताते हुए पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने बताया कि प्रशिक्षण–शिविर में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, दिल्ली आदि स्थानों से बालबोध प्रशिक्षण में उपस्थित 233 विद्यार्थियों में से 177 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 78 ने विशेष योग्यता, 59 ने प्रथम श्रेणी, 15 ने द्वितीय श्रेणी एवं 2 ने तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। 23 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान उदित विनय जैन मंगलायतन ने, द्वितीय स्थान ऋषभ राकेश जैन मंगलायतन ने एवं तृतीय स्थान पूजा सुबोध जैन दिल्ली, नयन राकेश जैन सागर, प्रांजल प्रवीण जैन मंगलायतन, कु.चेतना अजीत जैन ग्वालियर व श्रीमती रागिनी निलय जैन आगरा ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में उपस्थित 99 विद्यार्थियों में से 89 ने परीक्षा दी। इनमें से 26 ने विशेष योग्यता, 48 ने प्रथम श्रेणी, 7 ने द्वितीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। 8 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान श्रीमती संगीता-राकेश शास्त्री लोनी दिल्ली ने, द्वितीय स्थान संदेश सुरेशचंद जैन जयपुर एवं तृतीय स्थान कु.निधि ऋषभ जैन सागर ने प्राप्त किया।

अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का दीक्षांत भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों ने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसे पाठशाला के माध्यम से सभी को बांटने की प्रेरणा दी।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री मंगलसेनजी जैन ने की एवं अतिथि के रूप में श्री जैनबहादुर जैन कानपुर, श्री आदीशजी जैन, पृथ्वीचंदजी जैन इत्यादि महानुभावों के साथ-साथ पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा भी उपस्थित थे।

सभा को डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने भी संबोधित किया। अन्त में श्री सुनील जैन एवं प्रमोद जैन ने शिविर के सफल संचालन हेतु सभी का आभार व्यक्त किया, साथ ही सभी अध्यापकगणों व विद्वत्जनों का भी हार्दिक स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन रजत जैन सोनागिर व कु.चेलना जैन ग्वालियर ने किया।

सिद्धभक्ति

22 सातवीं पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इसी सिद्धचक्र विधान की छठवीं पूजन की जयमाला के तीसरे छन्द में भी कहा है कि सिद्ध भगवान दयाभाव से रहित हैं।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्रवचनसार गाथा ८५ में मनुष्य और तिर्यंचों के प्रति करुणाभाव को मोह (मिथ्यात्व) का चिह्न कहा है।

उक्त संदर्भ में जिनको विशेष जानने की इच्छा हो, उन्हें प्रवचनसार की उक्त गाथा और उसकी आचार्य अमृतचन्द्र और आचार्य जयसेन कृत संस्कृत टीका देखना चाहिए।

जो लोग प्राकृत और संस्कृत नहीं जानते, उन्हें इस गाथा और उसकी टीका के भाव को सहज, सरल सुबोध हिन्दी में प्रवचनसार अनुशीलन भाग १ गाथा ८५ का अनुशीलन का गहराई से स्वाध्याय करना चाहिए।

हिन्दी साहित्य के दिग्गज विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने करुणा नामक निबंध में लिखते हैं कि **दूसरों के दु:ख को देखकर जो दु:ख होता है, उस दु:खरूप भाव का नाम ही दया है।**

शुक्लजी का कथन मूलत: इसप्रकार है –

''दूसरों के दु:ख के परिज्ञान से जो दु:ख होता है, वह करुणा, दया आदि नामों से पुकारा जाता है और अपने कारण को दूर करने की उत्तेजना करता है।[१]''

एक अजैन विद्वान के ध्यान में यह बात आ गई कि करुणा-दया दूसरों के दु:ख को देखकर होनेवाले दु:ख का नाम है; पर हमारे साधर्मी भाइयों की समझ में स्वयं तो आता ही नहीं है, दूसरे के समझाने पर भी नहीं आता। क्या करें ? होनहार जानकर ही समता आती है।

यद्यपि लोक में यह दयाभाव-करुणाभाव बहुत अच्छा भाव माना जाता है। गुजरात में तो जीवदया नाम की अनेक संस्थाएँ चलती हैं और वे जीवदया का बहुत बढ़िया काम करती हैं।

महाकवि तुलसीदासजी लिखते हैं –

दया धर्म का मूल है अर पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए जबतक घट में प्राण।।

ऐसे अनेक छन्द जैनधर्म की पुस्तकों में भी मिल जायेंगे।

इसी सिद्धचक्र विधान की चौथी पूजन की जयमालाओं में भी कुछ पंक्तियाँ आई हैं; जो इसप्रकार हैं –

(चौपाई)

भावलिंग बिन कर्म खिपाई, द्रव्यलिंग बिन शिव पद पाई।।३।।
नय विभाग बिन वस्तु प्रमाणा, **दया भाव बिन निज कल्याणा।**
यों अजोग कारज नहीं होई, तुम गुण कथन कठिन है सोई।

इन छन्दों में लिखा है कि जिसप्रकार भावलिंग के बिना कर्मों का नाश नहीं होता, द्रव्यलिंग के बिना मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती, नय विभाग के बिना वस्तुएँ प्रमाणित नहीं होतीं और **दयाभाव के बिना अपना कल्याण नहीं होता;** उसीप्रकार आपके गुणों का कथन करना भी संभव नहीं है।

जैनदर्शन के अनुसार भी यह दु:खरूप दया का भाव शुभभाव है; अत: पुण्यबंध का कारण है। भले ही यह दयाभाव पुण्यबंध का कारण हो, पर बंध का ही कारण है, मुक्ति का कारण नहीं। यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है।

यद्यपि व्यवहार से यह बहुत अच्छा भाव है; तथापि निश्चय से यह भाव दु:खरूप है, बंध का कारण है; इसलिए अरहंत और सिद्ध परमेष्ठी ने इसका अभाव कर दिया है। इसकारण वे परम पूज्य बने हैं।

व्यवहार में धर्म माननेवाले लौकिक जन तो इसे मानते ही हैं; ज्ञानीजनों के जीवन में भी यह भाव पाया जाता है, भरपूर पाया जाता है; परंतु यह दु:खरूप भाव है। **दु:खरूप भाव अच्छा कैसे हो सकता है ?**

यह कर्मोदयजन्य भाव है, कर्मोदयजन्य भाव तो राग-द्वेषरूप ही होते हैं। यह भी रागरूप भाव है, दु:खरूप भाव है। **जहाँ वीतराग भाव को धर्म माना गया हो, वहाँ यह रागरूप भाव धर्म कैसे हो सकता है?**

संसार में जितने जीव हैं, वे सभी दु:खी हैं और इस बात को अरहंत और सिद्ध भगवान केवलज्ञान द्वारा अत्यन्त स्पष्टरूप से जानते हैं; पर क्या वे उनके दु:खों को स्वयं दूर कर सकते हैं ?

यदि कर सकते होते तो आज कोई दु:खी दिखाई नहीं देता; क्योंकि वे सबका दु:ख दूर कर ही देते।

यदि नहीं कर सकते तो फिर यदि उनके हृदय में दया उत्पन्न हुई और वे दु:ख दूर न कर सके तो अनंत दु:खी हो जायेंगे।

दूसरों के दु:ख को देखकर जो दु:ख होता है – यदि इसका नाम दया है तो फिर यह **दु:खरूप दया अनंत सुखी भगवान को कैसे हो सकती है ?**

दया को धर्म बतानेवाले जितने भी कथन जिनागम में प्राप्त होते हैं; वे सब व्यवहारनय से किये गये उपचरित कथन हैं और **दु:खरूप दयाभाव को रागभावरूप होने से वीतरागी धर्म में बंध का कारण होने से हेय कहा गया है –** वे सब वचन वस्तुस्वरूप के आधार पर किये गये निश्चय कथन हैं, परमार्थ कथन हैं।

अत: इसे समझने के लिए निश्चय-व्यवहारनयों का स्वरूप समझना होगा।

पूजन की उक्त पंक्तियों में भी कहा है कि **– नय विभाग विन वस्तु प्रमाणा – नय विभाग को जाने बिना वस्तु का प्रामाणिक ज्ञान नहीं हो सकता।**

जो कुछ भी हो, इस विषय को समझने के लिए बहुत गहरे चिन्तन-

१. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के श्रेष्ठ निबंध, करुणा, पृष्ठ ६०

मनन की आवश्यकता है। यहाँ तो मात्र आप इतना समझ लीजिए कि **इस पूजन-विधान में दयारहित भगवान को अर्घ्य चढ़ाया गया है।**

यदि नयों के संबंध में विशेष जानने का भाव आया हो तो लेखक की अन्य कृति **परमभावप्रकाशक नयचक्र** का अध्ययन करना चाहिए।

जयमाला के आरंभ में तीन दोहे हैं; उनमें से पहला दोहा इसप्रकार है–

(दोहा)

होनहार तुम गुण कथन, जीभ द्वार नहीं होय।
काष्ठ पांवसैं अनल थल, नाप सकै नहीं कोय ।।१।।

जिसप्रकार कोई व्यक्ति अग्निमय जमीन को काठ के पाँव से नहीं नाप सकता; क्योंकि अग्निमय जमीन पर लकड़ी का पैर रखते ही वह जलने लगेगा। जिसप्रकार यह कार्य असंभव है; उसीप्रकार हे होनहार सिद्ध भगवान ! आपके गुणों का कथन इस जिव्हा के द्वारा संभव नहीं है।

इसप्रकार हम निरंतर देखते आ रहे हैं कि कवि बार–बार यह कहते हैं कि आपके गुणों का वर्णन करना मेरे वश की बात नहीं है।

मेरे ही क्या किसी के भी वश की बात नहीं है; फिर भी हम जो कुछ भी कह रहे हैं, लिख रहे हैं; वह सब हमारे हृदय में विद्यमान आपकी अपार भक्ति का ही परिणाम है।

दूसरा छन्द इसप्रकार है –

(दोहा)

सूक्षम शुद्ध स्वरूप का, कहना है व्यवहार।
सो व्यवहारातीत हैं, यातें हम लाचार।।२।।

वस्तु के अति सूक्ष्म शुद्धस्वरूप का कथन करना, कथनमात्र व्यवहार है और हे भगवन्! आप व्यवहारातीत हैं; इसलिए आपके गुण कथन करने में हम लाचार हैं।

तात्पर्य यह है कि हम आपके गुणों का कथन नहीं कर सकते।

जो बात विगत छन्द में कही थी; उसी बात को फिर नये रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं कि आपके या भगवान आत्मा के सूक्ष्म शुद्ध स्वरूप का कहना मात्र व्यवहार ही है। आपके या भगवान आत्मा के व्यवहारातीत होने से व्यवहार से भी मूल बात नहीं कर सकते। इसलिए हम अपनी लाचारी व्यक्त कर रहे हैं।

इसीप्रकार का भाव भक्तिकाव्य भक्तामर स्तोत्र में व्यक्त किया गया है; जो इसप्रकार है –

(वसंततिलका)

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्।।५।।
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ।।६।।

यद्यपि आपके गुणों का वर्णन करना संभव नहीं है; तथापि हे मुनियों के ईश! शक्ति से रहित होने पर भी मैं आपकी भक्ति के वश होकर ही आपका स्तवन करने में प्रवृत्त हुआ हूँ।

आखिर क्यों नहीं होता ? क्या अपनी शक्ति का विचार किये बिना ही गाय गहरी प्रीति होने के कारण अपने शिशु के पालन–पोषण एवं रक्षा के लिए शेर के सामने आक्रमण करने को तैयार नहीं हो जाती है ?

यद्यपि शेर के सामने गाय का जाना अपनी मौत को बुलाना ही है; तथापि यह जानते हुए भी गाय अपने बच्चे को बचाने के लिए शेर का सामना करने को तैयार हो जाती है। यद्यपि यह उसका दुस्साहस ही है; तथापि सन्तान के मोह में वह ऐसा दुस्साहस करती ही है।

उसीप्रकार आपका स्तवन करने का यह प्रयास मेरे लिए एक प्रकार से दुस्साहस ही है; तथापि आपकी भक्ति के वश होकर मेरे द्वारा यह दुस्साहस किया जा रहा है।।५।।

यद्यपि मैं अल्पश्रुत हूँ, कम पढ़ा–लिखा हूँ; इसलिए जो श्रुतवान है, उनके लिए हँसी का पात्र हूँ; तथापि तुम्हारी भक्ति ही मुझे जबरदस्ती बोलने को बाध्य करती है, मुखर बनाती है।

यदि कोयल बसंत ऋतु में मधुर बोलती है, मीठा बोलती है तो उसका कारण एकमात्र आम की सुन्दर कली ही है।

जब बसंत ऋतु में आम के पेड़ों पर बोर आता है तो उसकी सुगंध से उल्लसित होकर कोयल कूकने लगती है, वह स्वयं को रोक नहीं पाती; उसीप्रकार महाकवि मानतुंग कहते हैं कि हे भगवन् ! आपकी भक्ति मुझे आपके गुणगान करने के लिए इतना उत्साहित कर रही है कि मैं यह जानते हुए भी कि बहुश्रुत लोग मुझ अल्पश्रुत का इस भक्तिकाव्य के कारण परिहास करेंगे, मजाक उड़ायेंगे, मुझ से रुका नहीं जा रहा है; यह आपकी भक्ति मुझे मुखर बना रही है; मैं अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ। परिणामस्वरूप यह भक्तिकाव्य बन रहा है।।६।। **(क्रमशः)**

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर
(रविवार, दिनांक 27 जुलाई से मंगलवार 5 अगस्त, 2014 तक)
शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।
शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।
शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी : कानजीस्वामी

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

''आत्मा......आत्मा.....आत्मा.....भगवान आत्मा सदा ही अति निर्मल है, पर से अत्यन्त भिन्न परम पावन है। यह त्रिकाली ध्रुवतत्त्व आनन्द का कन्द और ज्ञान घनपिण्ड है। रंग, राग, और भेद से भी भिन्न अतीन्द्रिय परम पदार्थ निजात्मा ही एकमात्र आश्रय करने योग्य है। उसका ही आश्रय करो, उसमें ही जम जावो, उसमें ही रम जावो।''– यह प्रेरणा देते-देते लाखों की सभा में भी, क्षणभर को ही सही, अपने में रम जाने वाले, अपने में ही जम जाने वाले युगान्तरकारी आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी को लाखों आँखों ने लाखों बार अपने में मग्न होते देखा होगा। उन्होंने क्या कहा ? उसका क्या भाव है ? कानों से सुनकर चाहे बहुत कम लोगों ने समझ पाया हो, पर आँखों से देखने वालों ने यह अनुभव अवश्य किया होगा कि स्वामीजी जो कुछ बोल रहे हैं, वह अन्तर की गहराई से आ रहा है, वह मात्र व्याख्यान के लिये व्याख्यान नहीं है।

'गंगा गये गंगादास और जमना गये जमनादास' वाली बात वहाँ नहीं है। चाहे पचास व्यक्तियों की सभा हो, चाहे पचास हजार की; चाहे अपने हों, चाहे पराये; वहाँ तो एक ही बात है और वह भी पर और पर्याय से भिन्न केवल आत्मा की। गिरगिट का सा रंग बदलने वाले तथाकथित आध्यात्मिक प्रवक्ताओं के समान 'अन्दर कुछ और बाहर कुछ' वाली बात उनमें आप कभी नहीं पायेंगे।

उनकी वाणी में किसी का विरोध नहीं आता, मात्र अपना अविरोध झरता है। वे अपनी बात, अनुभव की बात, आगम की बात अपने तरीके से सबके सामने रखते हैं। कौन क्या गलत कह रहा है, गलत कर रहा है; यह जानने के लिये, सुनने के लिये, कहने के लिये उनके पास समय नहीं है; सत्य का अनुभव करने और निरूपण करने से अवकाश मिले तब तो यह सब किया जाये। यह तो उनका काम है, जिन्हें सत्य से कोई सरोकार नहीं है, धर्म जिनका धन्धा है। धर्म को जीवन मानने वाले स्वामीजी इन सब बातों से बहुत दूर हैं।

यदि आत्मज्ञान का नाम ही अध्यात्म है तो स्वामीजी सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक सत्पुरुष हैं, क्योंकि उनका चिन्तन, मनन, कथन, अनुभवन सब कुछ आत्मामय है। अधि=जानना, आत्म=आत्मा को– इसप्रकार अपने आत्मा को जानना ही अध्यात्म हुआ। अध्यात्म की उक्त परिभाषा पूज्य स्वामीजी पर पूरी तरह घटित होती है।

(क्रमशः)

भक्तिभाव से मनाया गया –

श्रुतपंचमी महापर्व

(1) दिल्ली : प्रशिक्षण शिविर के दौरान ही दिनांक 2 जून को श्रुत के अवतार का मंगलपर्व श्रुतपंचमी आया, जिसे अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर जिनवाणी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें षट्खण्डागम व चार अनुयोगों की विशेष रूप से सजी हुई पालकी में एवं 125 जिनवाणी को बहिनें अपने सिर पर लेकर गाजते बाजते चल रही थीं। तत्पश्चात् श्रुतपंचमी पर्व पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विशेष व्याख्यान का लाभ सभी को मिला। इसके पश्चात् सरस्वती पूजन की गई।

सायंकाल स्टेज पर विराजमान जिनवाणी के समक्ष जिनवाणी की बधाइयों का विशेष आयोजन किया गया, इसमें पूरे पाण्डाल के सभी लोगों ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया।

(2) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्रुत पंचमी पर्व के अवसर पर वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल की ओर से पूजन-विधान का आयोजन हुआ, जिसमें युवा फैडरेशन ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के श्रुतपंचमी पर विशेष प्रवचन का लाभ मिला। इससे पूर्व इसी मंदिर से राजस्थान जैन साहित्य परिषद् के तत्त्वावधान में जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई, जो संघीजी के मंदिर पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127